



॥ अस्मिता एसोसिएशन की ओर से एक गौरवपूर्ण पुकार ॥

"रहे न रहे हम... महका करेंगे !"

ब्रह्मांड की चैतन्य शक्तियों का बुलावा: श्री राम के ननिहाल में महादेव की स्थापना !

प्रिय राष्ट्रभक्त सनातनियों, सादर जय सियाराम, हर-हर महादेव।

यह कोई साधारण संदेश नहीं है, और न ही यह आपकी स्क्रीन पर महज़ एक इत्तेफाक से आया है। अगर आज आप इसे पढ़ रहे हैं, तो मान लीजिए कि समूचे ब्रह्मांड की अदृश्य चैतन्य शक्तियां स्वयं आपको चुन रही हैं एक ऐसे इतिहास का हिस्सा बनने के लिए, जो आने वाले हजारों वर्षों तक अमर रहेगा।

छत्तीसगढ़ — जो साक्षात प्रभु श्री राम का पावन ननिहाल है। यहाँ का कण-कण, यहाँ की माटी का एक-एक हिस्सा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के चरण-रज से पल्लवित और धन्य है। और आज, इसी पावन धरा पर, जिला बालोद के ग्राम चौरेल में, जीवनदायिनी तांदुला नदी के ठीक बीचों-बीच अस्मिता एसोसिएशन के माध्यम से एक महा-इतिहास रचा जा रहा है।

हम अपने इस तुच्छ सहयोग से किसी और को नहीं, बल्कि स्वयं हमारे प्रभु श्री राम के आराध्य, देवाधिदेव महादेव को स्थापित करने जा रहे हैं!

प्रकट हो रहे हैं — "श्री छत्तीसगढ़ेश्वर महादेव"

तांदुला की लहरों के बीच समय की छाती पर एक ऐसा शाश्वत सत्य लिखा जा रहा है, जो विज्ञान और हमारी प्राचीन वैदिक आस्था का एक अनूठा और अजेय संगम है:

63 फीट का महाकाय विग्रह: यह अलौकिक शिवलिंग कुल 63 फीट ऊंचा होगा, जिसमें से 30 फीट का हिस्सा जमीन और जल की अगाध गहराइयों के नीचे अजेय नींव बनकर सनातन की शक्ति को थामे रखेगा।

शिल्पकार अरुण योगीराज की छैनी: इस ईश्वरीय गाथा को अपने हाथों से जीवंत कर रहे हैं देश के गौरव श्री अरुण योगीराज जी — वही दिव्य शिल्पकार जिन्होंने अयोध्या में प्रभु श्री रामलला की उस विश्वविख्यात विग्रह को गढ़ा है, जिसे देखकर पूरी दुनिया सम्मोहित है।

अक्षुण्ण कृष्णा ग्रेनाइट पत्थर: इस धरती का सबसे कठोर, शुद्ध और जीवंत पत्थर - 'कृष्णा ग्रेनाइट'। सदियों का चक्र घूमेगा, ऋतुएं बदलेंगी, महाप्रलय आएगी और चली जाएगी, लेकिन शुद्ध पत्थरों की प्राचीन इंटरलॉकिंग से बने हमारे श्री छत्तीसगढ़ेश्वर महादेव हजारों सालों तक चिरस्थायी और अक्षुण्ण रहेंगे।

पूर्णतः प्राचीन पद्धति (शून्य सीमेंट, शून्य लोहा): आधुनिक युग की सीमेंट और लोहे की उम्र मुश्किल से 70 से 100 साल ही होती है। इसलिए, महादेव के इस महाविग्रह के निर्माण में एक ग्राम सीमेंट या लोहे का उपयोग भी नहीं किया जाएगा!

अजेय इंटरलॉकिंग सिस्टम (Interlocking System): यह पूरा विग्रह हमारे भारत की अति-प्राचीन वैदिक वास्तुकला की इंटरलॉक पद्धति से तैयार होगा। पत्थरों को आपस में इस तरह तराश कर जोड़ा जाएगा कि वे एक-दूसरे को सदियों तक बिना किसी जोड़ के जकड़े रहेंगे।

"सत्य तो यह है कि महादेव को स्थापित करने की हैसियत हम इंसानों की कहाँ? यह हमारा दान नहीं है, बल्कि ब्रह्मांड की सर्वोच्च चैतन्य शक्तियाँ स्वयं हमसे यह सेवा करवा रही हैं!"

यह हमारा दान नहीं... ब्रह्मांड का संकल्प है!

यह कार्य किसी एक व्यक्ति या राजा का नहीं, बल्कि भारत के कोने-कोने में रहने वाले हर सनातनी के सामूहिक संकल्प से पूरा होगा। इस महायज्ञ में प्रत्येक राष्ट्रभक्त का सहयोग वांछित है।

वैदिक अनुष्ठान और अर्पण: इस युगान्तरकारी निर्माण को एक निर्माण नहीं, बल्कि एक जीवंत वैदिक अनुष्ठान मानकर आपसे कम से कम मात्र ₹ 369/- ऑनलाइन की एक पवित्र आहुति और आत्मिक अर्पण, जिससे पारदर्शिता हमेशा बनी रहे।

आपका अमरत्व: जब हम और आप इस दुनिया में नहीं होंगे, जब हमारी आने वाली कई पीढ़ियाँ भी इतिहास बन चुकी होंगी... तब भी तांदुला नदी की लहरों के बीच प्राचीन पद्धति से खड़ा यह महाविग्रह पूरी दुनिया को चीख-चीख कर बताएगा कि इसे बनाने में भारत के एक-एक आम सनातनी का आध्यात्मिक जुड़ाव और समर्पण लगा था।

क्या हम महज़ ₹ 369/- बचाकर समृद्ध हो जाएंगे? कदापि नहीं! लेकिन इस पावन महायज्ञ में इसे अर्पित करके हम समय की सीमाओं से परे 'अमर' जरूर हो जाएंगे। अपनी अंतरात्मा की पुकार सुनिए, खुद को रोकिए मत!

सीधे "श्री छत्तीसगढ़ेश्वर महादेव" के चरणों में अपना अंशदान कम से कम मात्र (₹ 369/-) समर्पित करें।
चैतन्य शक्तियों के इस आमंत्रण को स्वीकार करें और इस युग-परिवर्तन के साक्षी बनें।

वैदिक अनुष्ठान और अर्पण (आंतरिक आत्मा की स्वेच्छा से समर्पित करें)

"तन समर्पित, मन समर्पित, और यह जीवन समर्पित;
चाहता हूँ राम के ननिहाल में, एक कंकड़ शिव को अर्पित।"

अस्मिता एसोसिएशन